ANVESHA-A Multidisciplinary E-Journal for all Researches
Bi annual, Bi lingual, Peer reviewed, Referred Journal
Available online on: www.anveshaejournal.com
DOI-10.55183/amjr.2022.vo3.i.01.006

Volume 3, Issue 1, June 2022

e-ISSN 2582-6719

'गली आगे मुड़ती है को पढ़ते हुए'

डॉ० स्मृति , प्रवक्ता हिन्दी, किसान इण्टर कॉलेज, सौंख खेड़ा, मथुरा
ई-मेल smriti.30475@gmail.com

डॉ० शिवप्रसाद सिंह परिचय के मोहताज नहीं। कुछ नाम गुमनाम होते हैं और कुछ का नाम ही काफी होता है। आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य का परिचय ही शिव प्रसाद सिंह के नाम से शुरू होता है।

शिवप्रसाद सिंह एक जीवन्त किंवदन्ती है। इनका नाम लेते ही काशी, बनारस, वाराणसी, अस्सी और वहाँ पर हाथ की रेखाओं की तरह जुड़ी हूई गलियों के बीच बसा शहर..... और उस शहर के रस में बसे बनारसी पान गोदौलिया की ठंडाई और....'का गुरू' का संबोधन साथ ही बनारस के घाट के लोगों का दैनिक जीवन, जो संभवतः सूर्योदय के पहले और बहुत पहले न जाने कब शुरू हो जाता है।

जीवन की बारीकियाँ, संस्कृति, सभ्यता ही उनके कथा साहित्य का मूल है। उन्होंने बहुत से उपन्यास लिखे। शिवप्रसाद जी का पहला उपन्यास 'अलग-अलग वैतरणी' जो काफी चर्चित रहा है। इसी क्रम में 'गली आगे मुड़ती है' उपन्यास की रचना शिवप्रसाद जी ने किया जो पूरे काशी के सांस्कृतिक चित्रण को पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है। बनारस की गलियों में रचे-बसे बंगाली, गुजराती, मराठी, नेपाली संस्कृतियों की सुन्दर झाँकी लेखक ने बेबाकी से प्रस्तुत किया है। जिसे काशी की संस्कृति से अलग कर पाना कठिन है। इस उपन्यास का वृहद अंश धर्मवीर भारती जी ने अपनी पत्रिका 'धर्मयुग' में धारावाहिक के रूप में छापा और उसकी ख्याति बढ़ती गई। पाठकों के लगातार प्रशंसा से शिवप्रसाद जी लेखन कार्य करते रहे।

शिवप्रसाद सिंह पहले कहानीकार हैं तब उपन्यासकार। उनके उपन्यासों में भी कहानी विन्यास दिखता है। 'गली आगे मुड़ती है' उपन्यास में दो कहानियों की साथ-साथ चलती है। एक बनारसी शैली की कथा तो दूसरी हिन्दी आन्दोलन की कथा।

इस उपन्यास में श्री सिंह ने युवा असंतोष को केन्द्र में रखकर ही बनारस शहर के जीवन को दिखाया है। उस समय बनारस में अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन तेज पकड़ रहा था, जिसे उपन्यासकार ने युवा असन्तोष से जोड़कर सामने रखा है। बनारस की संस्कृति उसे अन्य शहरों से अलग करती है। बनारस में सभी प्रान्तों के लोग रहकर भी अपनी प्रान्तीय तीज-त्योहारों को मनाते हैं। इसी विशेषता के कारण बनारस अन्य शहरों से अलग दिखाई देता है।

युवा आक्रोश एक विश्वव्यापी समस्या है जिस पर राजनेता, समाजशास्त्री और शिक्षा विद् सभी चिंतित हैं। युवा समस्या केवल छात्र-समस्या नहीं हो सकती लेकिन युवा के नाम पर वह एक संघटित समुदाय है।[१] वस्तुतः यह समस्या का संक्षेपीकरण है। सरलीकरण भी।[२]

'गली आगे मुड़ती है' में लेखक ने सातवें दशक की उस काशी का चित्रण किया है जो भाषाई छात्र आंदोलन ने लेकर राजनीति को प्रभावित करती हुई माफिया सरगनाओं तक की सारी पोल खोल कर रख देती है। इस उपन्यास में भारतीय लोकतंत्र और लोक मानस के मन में जितने अर्न्तद्वन्द्व या अन्तर्विरोध खुलकर सामने आ जाते हैं। शिवप्रसाद

1 वैतरणी से वैश्वानर तक की यात्रा - आनन्द पाण्डेय, पृ६ ८८

२ गली आगे मुड़ती है, नुक्कड़ सभा - (भूमिका)

Available online on: www.anveshaejournal.com e-ISSN 2582-6719
DOI-10.55183/amjr.2022.vo3.i.01.006

जी की लेखनी में उनके शहर काशी की मिट्टी की खुशबू आती है। वे बनारस से दूर जाकर भी वहाँ की संस्कृति में सांस लेते थे चाहे वह गंगा घाट हो, दुर्गाकुण्ड हो, अस्सी, मणिकर्णिका कुछ भी हो। 'गली आगे मुड़ती है' उपन्यास का अन्त शिथिल है। इसमें रामानन्द की कथा मुख्य है। किरण की कथा मुख्य कथा को विकसित करने के लिए आयी है। लेकिन दुर्भाग्य सबकी गली ही अलग हो जाती है।

इस उपन्यास में क्रमशः गाँव और शहर का वातावरण चित्रित हुआ है। इसमें बनारस का समस्त भूगोल और समाज पाठकों के सामने प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास में अधिकांश पत्र प्रतीक बनकर सामने आते हैं। जयंती किरण व लाजो क्रमशः बंगाली, गुजराती व भोजपुरी संस्कृ ति की प्रतीक हैं। इसके अलावा कई पात्र हैं जिनको काशी के निकष पर बुनकर चरित्र बनाया गया है। मुख्य पात्रों में रामानन्द, हरिमंगल, जमनादास, सुबोध भट्टाचार्य, देबू, किरण, जयंती आदि हैं। रामानन्द उपन्यास के केन्द्र में हैं। उसके बिना उपन्यास अधूरा है।

कथानक के सभी घटनाओं से रामानन्द का जुड़ाव है चाहे वह किरण-जयंती का प्रेम प्रसंग हो, युवजन सभा हो, छात्रों का जुलूस, आरती की पार्टी, सांस्कृतिक आयोजन या साधु जमुनादास का जीवन वृत्त आदि। वह एक साथ सभी जगह उपस्थित रहता है, समस्या का निदान निकालता है। साधारण पात्र होते हुए भी वह असाधारण कृत्य करता है।

'गली आगे मुड़ती है' में शिल्प का उपयुक्त तरीके से बिखराव भी है और उसका फैलाव भी है। उपन्यास में 'मैं' शैली पाठकों से लेखक का तादात्म्य स्थापित किया है। भाषा बनारसी मिश्रित हिन्दी कहें तो अत्युक्ति न होगी।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि शिव प्रसाद सिंह जी ने इस उपन्यास की बनारस की भाषा, संस्कृति, रहन-सहन, खान-पान, राजनीति के ताने-बाने से बुनकर सजाया है। बनारस को न जानने वाला भी यदि यह उपन्यास पढ़ता है तो उसके सामने बनारस का बनारसीपन उभरकर सामने आ जाएगा।

संदर्भ ग्रन्थसूची :-

१ 'गली आगे मुड़ती है' - उपन्यास
२ हिन्दी के आंचलिक उपन्यास और उनकी शिल्प विधि
३ हिन्दी उपन्यास : पहचान और परख-इन्द्रनाथ मदान
४ हिन्दी उपन्यास की सामाजिक चेतना - कुंवरपाल सिंह
५ वैतरणी से वैश्वानर तक - आनन्द कुमार पाण्डेय
६ कथाकार शिव प्रसाद सिंह - कामेश्वर प्रसाद सिंह
७ शिवप्रसाद सिंह : स्रष्टा और सृष्टि - पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु